॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीराधामाधवशतकम्

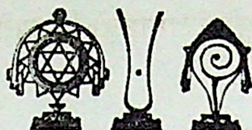


रचयिता—

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी'

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

✻ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✻



।। जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-
पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी'-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी
महाराज-विरचित—

श्रीराधामाधवशतकम्

अनुवादक—
पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त'
निम्बार्कभूषण, धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ, द्वैताद्वैत विशारद

प्रकाशक—
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जि०-अजमेर [राज०]

माघ शु० ५ वसन्त महोत्सव
बुधवार वि. सं. २०४६ द्वितीयावृत्ति न्यौछावर
दि० ३१-१-१९९० १००० *तीन रुपया*

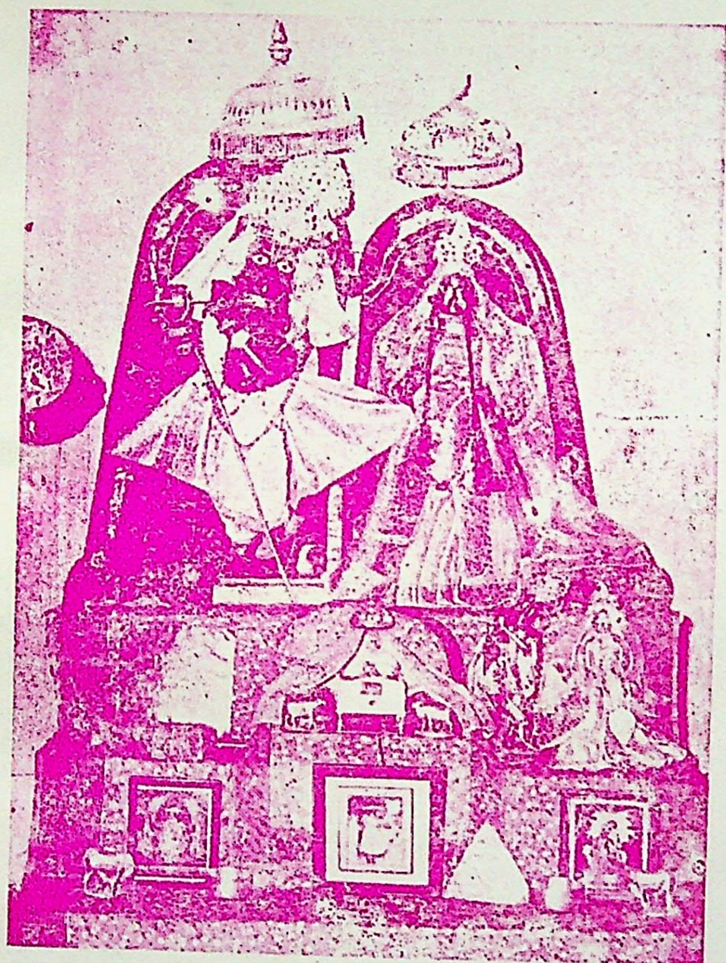
❀ श्रीराधामाधवो विजयते ❀

समर्पण

श्रीमद्वृन्दाटवीकुञ्ज-सखीवृन्दनिषेविते ।
रसिकाऽऽराधिते राधा-माधवाऽङ्घ्रिसरोरुहे ॥१॥

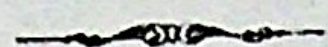
श्रीराधामाधवस्येदं-शतकं श्रुतिसारदम् ।
सश्रद्धमर्प्यते भक्त्या-कोटिप्रणतिपूर्वकम् ॥२॥

समर्पक:—
श्रीयुगलभक्तिकाम:
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य:



अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ
भगवान् श्रीराधामाधव प्रभु
की मनोहर छवि

प्रस्तुत नवनिर्मित श्रीराधामाधवशतक
के सम्बन्ध में
दो शब्द



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज अ० भा० श्री निम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) राजस्थान द्वारा नव-निर्मित "**श्रीराधामाधवशतकम्**" जो कि श्रीवृन्दावनविहारी प्रियाप्रियतमलाल युगलकिशोर श्यामाश्याम (श्रीराधाकृष्ण) की अन्तरङ्ग (निकुञ्ज) रहस्यमयी लीला (रसोपासना) से ओत-प्रोत है।

सरल संस्कृत भाषा में अनुष्टुप् छन्दों द्वारा इस शतक की रचना होकर इसके श्लकों के पूर्वार्द्ध (प्रथम आधे भाग) में श्रीनिकुञ्ज की विविध रसमयी लीलाओं का वर्णन है और उत्तरार्द्ध (पिछले आधे भाग) में "राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम्" ऐसा पाठ सभी श्लोकों में है, अतः रसिक भावुक भक्तजनों के लिये नित्य पाठ में तथा निकुञ्ज रसवेत्ता रसिकजनों के लिये नित्य सत्संग (प्रवचनादि) में यह परम उपादेय होगा।

परम कृपालु आचार्यश्री ने इस शतक की रचना कर सभी भक्तजनों को नित्य पाठ करने के लिये आचार्यपदेन उपदेश देते हुए उक्त शतक के सभी श्लोकों में उत्तरार्द्ध में श्रीवृन्दावनाधीश्वर (वृन्दावन के राजा दोनों श्याम राधिका रानी) इस रसिकों की वाणी के अनुसार परमाराध्य भगवान् श्रीराधामाधव का भजन करें अर्थात् भज धातु के विधि लिङ्ग में 'भजेत्' क्रिया का प्रयोग

करते हुए बताया है कि सब तत्त्वों का एक मात्र तत्त्व यही है कि अपने आराध्य का सदैव भजन करें।

आचार्यश्री द्वारा छोटे बड़े कई एक ग्रन्थ निर्माण होकर प्रकाशित होचुके हैं, जिनमें –आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्कमहा-मुनीन्द्र कृत प्रातः स्मरण स्तोत्र की "युग्म तत्त्व प्रकाशिका" संस्कृत टीका, युगलगीतिशतक, 'श्री श्रीजी महाराज के सदुपदेश', "श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु" आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

आपने "श्रीस्तवरत्नाञ्जलि" नामक एक वृहद् ग्रन्थ का भी निर्माण किया है जिसके पूर्वार्द्ध में २३ स्तोत्र हैं जिसमें धाम, धामी एवं श्रीगुरु वन्दना का वर्णन किया गया है जिससे साम्प्रदायिक रसिकजनों को परम लाभ होगा। उत्तरार्द्ध में १६ स्तोत्र हैं, जिसमें सभी भक्तों का हित चाहते हुए जगद्गुरु के नाते धामी के विविध स्वरूपों की महत्वपूर्ण भावना के साथ वन्दना की गई है। इस "स्तवरत्नाञ्जलि" के कतिपय स्तोत्र पृथक् रूप से भी प्रकाशित हुए हैं। भावुक भक्तजनों को मंगाकर लाभ उठाना चाहिये।

आशा है कि नित्य पाठोपयोगी परम उपादेय इस "श्रीराधा-माधव शतक" को नित्य पाठ में लेकर भक्तजन लाभान्वित होंगे। आचार्यश्री के आदेशानुसार भक्तजनों के लाभार्थ इसका हिन्दी अनुवाद भी कर दिया गया है।

निदेदक—

गोविन्ददास 'सन्त'

धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ

प्र० सं० 'श्रीनिम्बार्क'

ॐ भाव-प्रसूनाञ्जलि ॐ

वन्दारु-जन-मन्दारं कृपाऽमृतसरोवरम् ।
श्रीराधामाधवं वन्दे नित्यं विद्युद्घनायितम् ।।

ज्ञानस्वरूप और ज्ञाता होते हुये भी यह जीव जब तक देव-दुर्लभ मानुष देह को नहीं प्राप्त करता तब तक वह अपने अंशी श्री श्यामाश्याम, प्रिया-प्रियतम की सन्निधि के लिए कोई साधन नहीं कर सकता। अपने चित्त में उस चित्तचोर का चिन्तन, वन्दन, अर्चन आदि भक्ति से वह बहुत दूर रहता है। यह मानव शरीर ही भवसागर से पार होने के लिये पोत है। इसे प्राप्त करके भी यदि कोई भगवत्प्रवण नहीं होता है तो उसका जन्म निरर्थक ही है।

प्राप्य जन्म यदि मानुषं नरः
सेवते न तव पाद--पङ्कजम् ।
धिक् च जन्म कुलमादिदेव तद्
यौवनादि सकलं न शोभते ।।

अतः नित्य निकुञ्ज में परस्पर उरझे व विविध रहस्यमयी लीलाएँ करते हुए गोलोक विहारी का सदा अर्चन द्वारा वन्दन एवं भक्ति भाव भरित मानस में अर्चन व लीलाओं का दर्शन करते रहने पर वह पूतात्मा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का सान्निध्य अवश्य प्राप्त कर लेता है।

श्रीगोपालतापिनी उपनिषद् में निर्देश किया है कि "भक्ति ही वास्तव में भजन है"—

"भक्तिरस्य भजनम् । तदिहामुत्रोपाधिनैराश्येनामुष्मिन मनः कल्पनम् । एतदेव च नैष्कर्म्यम्"

भक्ति भगवत्कृपा से ही प्राप्त होती है। श्रीआद्याचार्य श्री निम्बार्क भगवान् ने इसे "प्रेम विशेष लक्षणा" कही है। विना प्रेम के श्रीयुगलचरणों में भाव का स्फुरण संभव नहीं। यही कारण है कि अहर्निश भावात्मक अर्चन व प्रेमरस में निरत पूज्यपाद अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति अनन्त श्री-विभूषित जगद्गुरु श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने 'श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु', युगल गीतिशतक, स्तवरत्नाञ्जलि आदि अनेक स्तुति ग्रन्थों के साथ ही इस नूतन, परम रसमय, विविध भावात्मक श्रीराधामाधवशतक की सुरम्य रचना की है।

यह अनुष्टुप् छन्द में है। संस्कृत में होते हुये भी इसकी भाषा इतनी सरल व सुन्दर है कि नित्य पाठ करने वालों को विना हिन्दी अनुवाद के भी परम आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

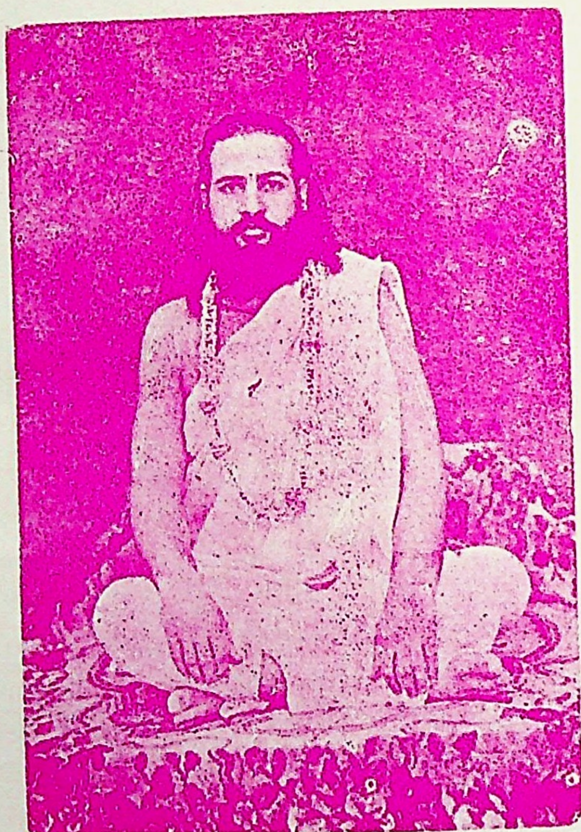
यद्यपि उपासना के अनेक रूप होते हैं, जिसको जो भावे वह वैसी ही कर सकता है। पूज्यपाद आचार्यश्री ने प्रस्तुत रचना में विशुद्ध निकुञ्जलीलाओं का स्मरण व मानस साक्षात्कार किया है।

"श्रीयुगलशतक" के समान ही यह "श्रीराधामाधवशतक" अवश्य ही भक्तजनों के लिये हितकर होगा - इस विश्वास व दृढ़ता के साथ प्रस्तुत ग्रन्थरत्न के लिये दैन्य व श्रद्धा के साथ अपनी "भावप्रसूनाञ्जलि" अर्पित करता हूँ।

विनीत —
रामगोपाल शास्त्री
जयपुर

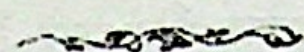
❀ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❀

—❀ जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्याय नमः ❀—



निखिल महीमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र यतिपतिदिनेश
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य
श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
[सलेमाबाद] किशनगढ़-राजस्थान

"त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्"



जब अनन्तकृपानिधि भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधामाधव की अहैतुकी कृपा हो जाती है तब असंभव भी संभव और कल्पनातीत भी प्रत्यक्ष हो जाता है। वे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थ हैं, सत्य संकल्प हैं, विश्वाधार हैं। "संकल्पादेवतच्छ्रुतेः" अर्थात् संकल्प मात्र से ही चराचर अनन्त विश्व ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति, स्थिति, लय कर देते हैं। उन श्रीहरि के ये कार्य स्वाभाविक हैं, बालवत लीलामात्र हैं, "लोकवत्तु लीला कैवल्यम्" लोकसृजनादि कार्य लीलारूप तथा सत्यस्वरूपात्मक हैं। "यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामौषधयः सम्भवन्ति। यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह विश्वम्"........... मकड़ी द्वारा निर्मित विचित्रात्मक जाल रचना की भांति अनन्त असीम विविध विचित्र संस्थान सम्पन्न विश्व ब्रह्माण्डों का सृजन, पालन एवं संहार होता रहता है।

वस्तुतः वे अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, जगज्जन्मादिहेतु सर्व-कारणकारण, सर्वनियन्ता, सर्वान्तरात्मा सर्वाधार सर्वेश्वर युगल-किशोर श्रीराधामाधव प्रभु ही सबके एकमात्र आश्रय हैं, परमा-धार हैं, निखिलप्रेरक हैं। इन्हीं परमाधाराधारस्वरूप दिव्यमङ्गल-विग्रह, करुणार्णव, अनन्तानुकम्पासुधासिन्धु, वृन्दावननवनित्य-निकुञ्जविहारी, युगलकिशोर, प्रियालाल श्यामाश्याम, सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु की प्रेरणा एवं दिव्यानुकम्पा से ही "श्रीराधा-माधवशतक" का प्रणयन हुआ। वे कृपामय दयामय प्रभु किसी को भी कुछ निमित्त बनाकर कुछ भी करालें। संसारासक्त अल्पज्ञ

मन्दमति प्राणी कर ही क्या सकता है, एकमात्र श्रीहरि ही सबके अवलम्ब हैं। यथार्थ में उपर्युक्त ग्रन्थ के सृजन में भी उन्हीं के दिव्य कृपाप्रसाद का मङ्गलमय विधान है।

जीवन क्षणभङ्गुर है। जीवन के क्षणिक स्थायित्व के लिये कोई भी समर्थ नहीं। जीवनक्रम सर्वजीवन–जीवन भगवान् श्री-सर्वेश्वर के अनुग्रह प्रसाद पर ही समाश्रित है। वे ही इस चेतना-चेतनात्मक जगत् के मूल कारण रूप हैं किन्तु विवेक शून्य प्राणी उन परात्पर श्रीसर्वेश्वर की अघटनघटनापटीयसी अनाद्यविद्या-कर्मात्मिका, त्रिभुवन विमोहिनी अनिर्वचनीय अचिन्त्यस्वरूपा श्रीभगवन्माया के नाना झञ्जावात प्रताडन से अपने स्वरूप का यथार्थ बोध करने में सक्षम नहीं हो पाता। अज्ञानजनित मोह में समासक्त इतस्ततः बम्भ्रम्यमाण रहता है। "दैवी ह्येषा गुण-मयी मम माया दुरत्यया" इस श्रीभगवद्‌वचन से तथा "अनादि-मायापरियुक्तरूपम्" आद्याचार्य श्रीनिम्बार्कभगवान् के एवंविध परमकल्याणकारी उपदेश से भी माया की प्रबलता एवं तदास-क्तता का स्पष्ट प्रतिपादन है।

यद्यपि मायाकृत अज्ञान से मुक्ति पाना अति दुरुह है तथापि "मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते" इस श्रीभगवदीय अग्रिम-वचन से तथा "त्वेनं विदुर्वैभगवत्प्रसादात्" श्रीनिम्बार्कभगवान् की इत्थंभूत सदुक्ति से श्रीभगवत्प्रपन्नता एवं उनकी मङ्गलमयी कृपा से यह मायासमासक्त जीवात्मा सुलभतया विषाक्त व्यामोह से निवृत होकर श्रीभगवदभिमुख हो जाता है और सहज में उन कृपामय श्रीहरि के कृपाकण से अपना कल्याण कर लेता हैं। अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीहरि-व्यासदेवाचार्यजी महाराज भी—

एक कृपा करि होय सो होई। साधन सिद्ध रह्यौ नहिं कोई ।।
नाकादिक नश्वर फल पावैं। जाय श्राय में श्रायु बितावैं ।।
जितनैं साधन उर में धरहीं। तितनैं या बिच श्रंतर करहीं ।।
सब तजि सदा मनावै याही। श्रौंरन तैं मनधरि श्रवग्याही ।।
'श्रीहरिप्रिया' परम-पद चाहैं। तौ या बिना न श्रान उमाहैं ।।

"श्रीमहावाणी" ग्रन्थ के सिद्धान्तसुख में वर्णित इस पद से श्रीयुगलकृपा की सर्वोत्कृष्टता का निर्वचन करते हैं। यथार्थतः श्रीभगवत्कृपा के बिना कोई वस्तु साध्य नहीं हो सकती। इसी एकमात्र कृपास्वरूप ही "श्रीराधामाधवशतक" का प्रणयन हुश्रा है। सर्वेश्वर युगलकिशोर श्रीराधामाधव प्रभु की प्रेरणानुसार जिस प्रकार स्फुरणा हुई तदनुसार ही इस शतक की तात्कालिक रचना दिनद्वय में ही सम्पन्न हुई। इस लघुरूपात्मक ग्रन्थ में संक्षिप्ततया वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव की निकुञ्ज रसपरक परमललित रसमयी लीलाश्रों का चिन्तन एवं उनके लोकोत्तर श्रनन्त श्रचिन्त्य रूप माधुर्य लावण्यादि दिव्यगुणों का सूत्रात्मक श्रनुसन्धान एवं प्रख्यापन करने की चेष्टा की है। वस्तुतस्तु जिस दृष्टि से भी जिस सरणि से भी उन श्रीयुगलप्रियालाल का श्रपने ग्रस्त व्यस्त जीवन में कुछ क्षण मात्र का श्रभिचिन्तन हो जाय तो वह भी परम श्रानन्दास्पद ही है।

वस्तुतः ये नित्य नवयुगलकिशोर परम रसमय श्रानन्दमय तथा प्रतिक्षण श्रनन्त श्रसीम सौन्दर्याऽमृतसारसिन्धु में नवनवायमान श्रवस्था में वृन्दावन नवनिकुञ्जलीलामध्य विराजित इतने सुशोभित रहते हैं जिनके मधुरातिमधुर श्रसमोर्द्ध्व सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य-कारुण्य सौगन्ध्य-सौशील्य--सौकुमार्यमार्दवादि निखिल गुणगणों के सतत श्राराधन में संलग्न निकुञ्ज सखीजन उस

अपूर्व अलभ्य अनिर्वचनीय परम दिव्य सुधारस का आस्वादन करती हैं जिसे कोटि-कोटि वृन्दारक-वृन्द तथा आप्तकाम पूर्णकाम निष्काम योगीन्द्र मुनीन्द्र अमलात्मा महात्मा परमहंसादि महापुरुष अपने निर्मल अन्त:करण में भी स्फुरित नहीं कर सकते। यह तो उन वृन्दावनविहारी श्यामाश्याम श्रीराधामाधव के श्री युगल चरणाम्भोज के प्रपन्नता पूर्वक समाश्रित होकर जो रसवेत्ता रसमर्मज्ञ रसिकाचार्य एवं रसिक भक्त महानुभाव हैं वे ही श्री युगलकृपारूप इस महारस का अनुभव कर सकते हैं। यथार्थ में इस रस की अभिव्यक्ति कृपासाध्य है। "यमेवैष वृणुते तेन लभ्य:" जिन पर वे अनुग्रह विग्रह सर्वेश्वर श्रीलाडिलीलाल अपनी रसवर्षिणी सहज कृपा कर दें वे ही महापुरुष इस रस परिधि में आने का सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं।

यह श्रीयुगल रस श्रुति, पुराण, सूत्र, तन्त्रादि प्रतिपादित तथा साङ्गोपाङ्ग परिवर्णित है। सूत्रात्मक रूप से ये श्रुतिमन्त्र तथा वेदान्तसूत्र कितना मधुर विवेचन करते हैं -"रसो वै स:" "रसं ह्येवाऽयं लब्ध्वा आनन्दी भवति" 'सोश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता' "स तत्र पर्य्येति जक्षन्क्रीडन् रममाण:" "स आत्मरति आत्मक्रीड आत्ममिथुन:" "आनन्दं ब्रह्म" "सैषा आनन्दस्य मीमांसा भवति" "आनन्दमयोऽभ्यासात्" आदि बहुविध वचन हैं। इन्हीं महनीय वचनों का "श्रीमहावाणी" प्रभृति रस ग्रन्थों में श्रीयुगलरस लीलाओं का सुविस्तृत वर्णन है। श्री श्यामाश्याम के निश्श्वासरूप इन श्रुतियों में इस रस का जो प्रतिपादन हुआ है वह बड़ा ही विलक्षण अतिसूक्ष्मता को लिये हुए है। "स तत्र पर्य्येति जक्षन् क्रीडन् रममाण:" इस वचन से स्पष्ट ही परिलक्षित है। कतिपय महानुभाव इस श्रीयुगल रस को

वेदातीत कह कर भ्रान्त धारणा का प्रचार करते हैं। यथार्थ में जिनको शास्त्रों का सम्यक् परिशीलन नहीं है वे ही इस प्रकार की उक्त धारणा का प्रसार करते हैं—किन्तु उन्हें स्वस्थ चित्त से शास्त्रों का विधिवत सम्यक् आलोडन तथा विचार पूर्वक गम्भीर चिन्तन करना चाहिये। इस निकुन्ज-रस को तथा श्रीगोपाल-मन्त्रराज को निगमागम से परे की वस्तु बताकर वेद पुराणादि शास्त्रराहित्य बताना स्वसम्प्रदाय जो अनादि वैदिकसत्सम्प्रदाय है उसे एक साधारण निम्न कोटि में पन्थ बनाने की परिकल्पना करना अकल्पनीय, सम्प्रदाय विपरीत अहितकर योजना है। वे स्वयं को रसमर्मज्ञ मानने वाले महानुभाव श्रीगोपालमन्त्रराज को न केवल वेदों से परे की वस्तु हो बताते अपितु श्रीमन्त्रराज की अनुपयोगिता बताकर उसके जप का भी निषेध करते हैं। इन रसिकंमन्य महानुभावों को इत्थंभूत कृत्य से ही संतोष नहीं परञ्च सश्रद्ध समागत द्विजवृन्दों के उपवीत (यज्ञोपवीत) को खण्डित कराके उसे सर्वदा के लिये त्याग कराने का दृढ़-संकल्प भी कराते हैं। वस्तुत: यह अत्यन्त खेदास्पद विचारणीय विषय है। कितने ही सरल हृदय भावुक साधकजन भी यथार्थता को न समझ कर भावुकतावश उनके सनातनधर्म विपरीत, स्वसम्प्रदाय, विपरीत, वेदादि शास्त्र विपरीत, अक्षुण्ण परम्परा मर्यादा विपरीत निर्देश को स्वीकार कर तदनुकूल आचरण करने को अग्रसर होजाते हैं। उन साधकजनों को भी चाहिये कि प्रथम वे सम्यक् रूप से यथार्थ तथ्य समझें, सम्प्रदाय के सही स्वरूप का परिज्ञान करें, स्वसम्प्रदायाचार्यों के प्राचीनतम शास्त्रों का मनन करें। इसके बाद ही पूर्वापर विचार करके ही कुछ निर्धारण करना उचित होता है। यों ही जहाँ जो सुन लिया उसे ही आचरण में चरितार्थ करना सम्प्रदाय के हित में महती बाधा है। उन रसिक महानुभावों को

भी चाहिये कि वे सर्व प्रथम स्व-सम्प्रदाय के पूर्वाचार्यों द्वारा समुपदिष्ट संस्कृत वाङ्मय ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन, अनुशीलन करें। उसके बाद उन्हीं आचार्यवर्यों द्वारा प्रतिपादित वाणी-ग्रन्थों का पूर्वापर विवेचनात्मक परिशीलन करें इनका मनमानी अर्थ न लगावें। अपने आप सभी विपरीत धारणायें स्वतः निवृत्त हो जायेंगी। अस्तु यहां इस प्रस्तुत आलेख में यह प्रसङ्गवशात् ही एतद्विषयक उल्लेख किया गया है।

"श्रीमहावाणी" आदि वाणी ग्रन्थों में उसी रस का विस्तृत विवेचन है जिसका कि उपनिषदों में सूत्र रूप से प्रतिपादन हुआ है। इसी श्रीयुगल रस की किञ्चित् अभिव्यक्ति "श्रीराधामाधव-शतक" में अवलोकन करने पर अनुभव में आवेगी। "श्रीराधा-माधवशतक" संस्कृत में पद्यात्मक रूप में होने के कारण इसे सर्व सुलभ बनाने हेतु हमारे ही संकेत पर विद्वद्वरेण्य पण्डित प्रवर श्री गोविन्ददासजी 'सन्त' धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ द्वैताद्वैत विशारद ने समयाभाव रहते हुए भी अपना अमूल्य समय देकर इसका सरस सरल भाषानुवाद भी कर दिया है जिससे इसके मनन करने में सभी को सुगमता रहेगी। ग्रन्थ के मूल श्लोकों की रचना में भी सरलता का इतना अधिक ध्यान रखा गया है कि जिससे मूलपाठ में साधारण पठित भी अर्थाविबोध कर सके। संभव है रसिक भावुकजन इस लघुरूपात्मक निकुञ्ज रस परक नित्यपाठोपयोगी ग्रन्थ का पठन मनन कर कुछ रसास्वादन लेंगे।

—राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य



❋ श्रीसर्वेश्वरो जयति ❋

।। जगद्‌गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

❋ श्रीराधामाधवशतकम् ❋

श्रीराधामाधवं वन्दे सर्वेश्वरप्रभुं परम् ।
हंसं सनत्कुमाराञ्श्च नारदं हरिभक्तिदम् ।।१।।

परात्पर सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधामाधव, श्रीहंस भगवान् श्रीसनकादि महर्षिगण तथा हरिभक्ति प्रदान करने वाले देवर्षिवर्य श्रीनारद मुनि की वन्दना करते हैं ।।१।।

श्रीमन्निम्बार्कमाचार्यं द्वैताद्वैतप्रवर्तकम् ।
वेदवेदान्तवाक्यार्थ——प्रतिपादकमाश्रये ।।२।।

स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, गीता, इन प्रस्थानत्रयी के यथार्थ अर्थ के प्रतिपादक आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की शरण में हैं ।।२।:

श्रीराधामाधवस्येदं शतकं श्रुतिसम्मतम् ।
विरच्यते मुदाऽनन्य-रसिकेभ्यः सुखप्रदम् ।।३।।

श्रीयुगल प्रियाप्रियतम के परम उपासक अनन्य रसिकजनों को आनन्द प्रदान करने वाला श्रुतिस्मृति पुराणादि शास्त्र सम्मत "श्रीराधामाधवशतकम्" की हम रचना करते हैं ।।३।।

[१]

विधीशेन्द्रादिगीर्वाणै ध्येयं नित्यं श्रुतिस्मृतम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[२]

वृन्दाटवीनिकुञ्जेषु सेव्यमानं सखीजनैः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३]

कदम्बपुष्पकुञ्जेषु स्वर्णसिंहासने स्थितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[४]

कालिन्द्या मञ्जुले कूले कञ्जकुञ्जे मनोरमम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५]

नीलोत्पलकरं दिव्यं वेणुनादकरं हरिम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[६]

कोटिकन्दर्पदर्पघ्नं सौन्दर्याऽमृतसागरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१]

ब्रह्मा-शिव इन्द्रादि समस्त सुर वृन्दों द्वारा ध्यान किये जाने वाले तथा श्रुति (वेदों) द्वारा परिगीयमान परमाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२]

श्रीवृन्दावन की निभृत निकुञ्जों में सखीजनों द्वारा परि-सेव्यमान परम आराधनीय वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३]

कदम्ब पुष्प कुञ्जों में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान वृन्दावनाधिप परम उपासनीय श्री राधामाधव का भजन करें।

[४]

श्री यमुनाजी के रमणीय तट पर सुन्दर कमल कुञ्ज में परम मनोहर स्वरूप आराधनीय वृन्दावनेश्वर श्री राधामाधव का भजन करें।

[५]

जिनके हस्तारविन्द में नील कमल सुशोभित है तथा वेणु-निनाद करते हुये परम दिव्य स्वरूप श्रीहरि परमोपास्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६]

कोटि–काम मद मर्दन तथा सौन्दर्यरसामृतसिन्धु सर्वविध आराधनीय वृन्दावन नव युगलकिशोर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७]

मल्लिकामालया मञ्जुं चारुचन्दनचर्चितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८]

चञ्चलखञ्जनाक्षञ्च कञ्जकिञ्जल्कमञ्जुलम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९]

कारुण्यकोषमानन्द-रससिन्धुं रसेश्वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[१०]

रासलीलाधरं दिव्यं रसधाराऽवगाहिनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[११]

अनन्ताऽनङ्गसौन्दर्य—माधुर्य— मार्दवाऽधिपम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[१२]

उपास्यं रसिकै र्नित्यं सेव्यं चाऽष्टसखीजनैः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[७]

मल्लिका (चमेली) के पुष्पों की माला धारण किये हुये सुन्दर चन्दन चर्चित सर्वदा उपासनीय वृन्दावनाधीश्वर श्रीराधा-माधव का भजन करें।

[८]

कमल पराग से सुशोभित तथा अति चञ्चल खञ्जन पक्षी के सदृश चंचल नेत्र वाले नित्य आराधनीय वृन्दावनाधिपति श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९]

करुणा-वरुणालय—रससिन्धु, रसधाम सर्वदा समाराध्य वृन्दावन कुञ्ज विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१०]

श्री निकुञ्ज रस धारा में अवगाहन करने वाले परम दिव्य रासलीला परायण वृन्दावन विहारी श्री राधामाधव का भजन करें।

[११]

असंख्य कामदेवों के समान सुन्दरता है जिनकी तथा जो माधुर्य और कोमलता के नायक हैं, ऐसे अतीव समाराध्य वृन्दा-वनभूप श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१२]

रसिक भक्तजनों द्वारा नित्य उपासनीय और श्रीरङ्ग-देव्यादि अष्ट सखीजनों द्वारा परिसेव्यमान नित्य चिन्तनीय वृन्दावनाधीश श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१३]

श्रीधामधरणीरम्यं धन्यं धन्यतमं शुभम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१४]

अमन्दाऽऽनन्ददं देवं दीनबन्धुं दयाकरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१५]

शरण्यं करुणापूर्णं पराभक्तिप्रदायकम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१६]

श्रीधामफलदं शीघ्रं कृपाधामकलानिधिम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१७]

असीमसौख्यदं शुद्धं राधासर्वेश्वरं वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१८]

निर्हेतुककृपाकोषं रसिकं रसिकाऽञ्चितम् ॥
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१३]

अपने विविध ललित लीलाविहार से श्रीधाम की दिव्य धरणी पर जो परम रमणीय और धन्यातिधन्य मङ्गलमय रसिकाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१४]

असीम आनन्द प्रदान करने वाले दीनबन्धु दया के सागर सर्वाराध्य कुन्ज विहारी श्री राधामाधव का भजन करें।

[१५]

शरणागत जन को अभय दान देने वाले करुणा के अगाध भण्डार पराभक्तिप्रदाता सर्वदेव आराधनीय वृन्दावन नित्य किशोर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१६]

श्रीधाम के सेवन का शीघ्र फल प्रदान करने वाले कृपा के धाम और विविध रसमयी ललित कलाओं के कमनीय कोष सर्वाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१७]

अपार सुख—सम्पत्ति प्रदाता, शुद्ध स्वरूप परम श्रेष्ठ राधासर्वेश्वर वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१८]

अहैतुकी कृपा के असीम भण्डार परम रसिक तथा रसिक जनों द्वारा पूजित वृन्दावनाधिपति श्री राधामाधव का भजन करें।

[१९]

अनन्तविश्वबीजञ्च विभुं वृन्दावनेश्वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२०]

रङ्गदेवीसखीसेव्यं हिता-हरिप्रियाऽञ्चितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२१]

मोहनहर्म्यभूमौ च रत्नसिंहासने स्थितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२२]

भ्रमरै गुंञ्जिते रम्ये श्रीवने नित्यशोभितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२३]

कालिन्द्या मध्यधारायां तरणौ परिशोभितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२४]

आदित्यतनयातीरे विहरन्तं स्मिताऽऽननम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[१९]

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के मूल कारण सर्वव्यापक वृन्दा-वनाधिपति नित्यनिकुञ्ज विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२०]

श्रीरङ्गदेवी सखी द्वारा सेव्यमान तथा श्रीहितुसखी, श्री हरिप्रिया सखी से परिपूजित निरन्तर समाराधनीय वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२१]

श्री मोहन महल की दिव्य भूमि पर रत्न सिंहासन पर विराजमान परमाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२२]

भ्रमरों की सुमधुर गुञ्जार से युक्त परम सुरम्य श्रीधाम वृन्दावन में सदा शोभायमान सर्वदा आराधनीय वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२३]

श्री यमुनाजी की बीच धारा में नौका विहार करते हुए परम सुशोभित भक्त-समाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२४]

सूर्यनन्दिनी (श्रीयमुनाजी) के मनोरम तट पर मधुर मन्द प्रसन्न मुख हो विविध रूप से विहार करने वाले हृदयाराध्य वृन्दावनेश श्रीराधामाधव का भजन करें।

[२५]

रसकेलिकलादक्षं किङ्करीजनवल्लभम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२६]

मणिमालालसत्कण्ठं हेमकुण्डलभूषितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२७]

शिखिपिच्छधरं ब्रह्म वरेण्यं परमीश्वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२८]

शान्ति-कान्तिमहासिन्धुं महालावण्यमन्दिरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२९]

मुक्तामौलिमनोज्ञञ्च मधुरं स्मरमोहनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[३०]

सखीभिः सार्द्धमानद्धं नृत्यन्तं रासमण्डले ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[२५]

रसरास केलि कला में परम चतुर तथा सहचरी जनों के अतिशय प्रिय हृदयेश्वर परमाराध्य वृन्दावन विहारी श्रीराधा-माधव का भजन करें ।

[२६]

रत्नखचित मणिमाला से सुशोभित है कण्ठ जिनका तथा सुवर्ण कुण्डलों से सुशोभित नित्यकिशोर हृदयाराध्य वृन्दावनाधिप श्रीराधामाधव का भजन करें ।

[२७]

मयूरपिच्छ को धारण करने वाले परब्रह्म, भजन करने योग्य सर्वसमर्थ परमाराध्य वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें ।

[२८]

शान्ति क्रान्ति आदि समस्त गुणों के महान् समुद्र, परम सौन्दर्य के आगार सर्वविध आराधनीय वृन्दावनाधिपति श्रीराधा-माधव का भजन करें ।

[२९]

नानाविध मोतियों के मुकुट को धारण करने वाले परम मनोहर सुमधुर स्वरूप तथा कामदेव को मोहित करने वाले वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें ।

[३०]

सखी-जनों के साथ लीला विहार में संलग्न, श्रीरास-मण्डल में नृत्य करते हुये नित्य आराधनीय वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें ।

[३१]

परात्परं रसब्रह्म रसवीजं रसावहम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३२]

रससिन्धुं रसाधारं रसदानपरायणम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३३]

रसकेलिकलाऽधीशं रसरासरसायनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३४]

रसभूमौ महारास—लीलालास्यमहापटुम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३५]

अनन्ताऽऽनन्दसद्धाम धामगं धामवासिनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३६]

वंशीवटतटे नित्यं रासलीलालसद्धरिम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३१]

परात्पर रसब्रह्म रस के मूल आश्रय तथा रस प्रदान करने वाले परमाराध्य वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३२]

रस के समुद्र रस के आधार तथा रसदान परायण समुपासनीय वृन्दावनकुञ्जविहारी श्रीराधामाधम का भजन करें।

[३३]

रसमयी नानाविध लीला कलाओं के स्वामी तथा रसरास स्वरूप परमोपास्य वृन्दावन के सर्वाधार श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३४]

विपिनराज श्रीवृन्दावन की रसमयी भूमि में महारास के लीला नृत्य में परम प्रवीण आराधनीय वृन्दावन के सर्वस्व श्री राधामाधव का भजन करें।

[३५]

अपार आनन्द के श्रेष्ठ धाम श्रीधाम स्थित तथा श्रीधाम में नित्यविहाररत सर्वाराध्य वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३६]

परम कमनीय वंशीवट के सुरम्य तट पर नित्य निकुञ्ज में सहचरियों के साथ विहार करने वाले दिव्य स्वरूप सखीजनाराध्य वृन्दावनाधिष्ठान श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३७]

नवनिकुञ्जसद्धाम्नि नित्यलीलारसप्रदम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३८]

सञ्चरन्तं समं कुञ्जे सहचरीभिरङ्कृतम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३९]

नित्यं रतिप्रदातारं नृत्यकेलिविलासकम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[४०]

दिव्यातिदिव्यमत्यन्त—माधुर्यधाम माधवम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[४१]

कदम्बतरुदोलायां दोलयन्तं दयार्णवम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[४२]

तडिद्भां राधिकां कृष्णं मेघश्यामं मनोरमम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[३७]

नव निकुञ्ज धाम में नित्य लीला रस प्रदान करने वाले परमोपास्य वृन्दावन विहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३८]

नित्य निकुञ्ज में सहचरियों के साथ दिव्यातिदिव्य ललित लीला विहार करने वाले परम दिव्य स्वरूप सखीजनाराध्य वृन्दावनाधिष्ठान श्रीराधामाधव का भजन करें।

[३९]

सर्वदा प्रेमाभक्ति प्रदान करने वाले नृत्य केलि परायण नित्य आराधनीय वृन्दावनेश श्री राधामाधव का भजन करें।

[४०]

परम दिव्य माधुर्य रस के धाम श्रीमाधव (प्रिया–प्रियतम) भक्तजनाराध्य वृन्दावन सर्वस्व श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४१]

कदम्ब वृक्ष की शाखा पर सुसज्जित झूला में झूलते हुये परम दयासागर परमाराध्य वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४२]

मेघमाला में आविर्भूत विद्युत (बिजली) की कान्ति के समान परम मनोहर घनश्याम (अर्थात् गौर-श्याम वर्ण) प्रिया-प्रियतम (श्रीराधाकृष्ण) नित्य वृन्दावनाधीश श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४३]

केकि–कीर–पिकैश्चारु गीयमानं निरन्तरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४४]

क्रीडन्तं कन्दुकक्रीडां किङ्करीभिः समं वने ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४५]

प्रेम्णा च व्यजनं मञ्जु वीजयन्तं परस्परम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४६]

कदाचिद्—यमुनाकूले कदाचित्–कुञ्जमन्दिरे ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४७]

श्रावं श्रावं सखीवार्तां विहसन्तं मनोहराम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४८]

स्मारं स्मारं सखीवाच्छां महारासविधायकम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[४३]

शुक-कोकिलादि पक्षी गणों द्वारा निरन्तर गीयमान हृदयाराध्य वृन्दावनाधिपति श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४४]

श्रीवन में सखीजनों के साथ कन्दुक-क्रीड़ा करते हुए प्रतिक्षण आराधनीय वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४५]

सखी-परिकर द्वारा निर्मित कदली-कदम्ब-ताल आदि द्रुमों (वृक्षों) के मनोहर पत्र--व्यजन (पत्तों के पंखे) से प्रेमपूर्वक सुखद सुवासित समीर (सुगन्धित--वायु) परस्पर में करते हुए भक्ताराध्य युगलकिशोर वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४६]

कभी तो श्रीयमुनाजी के सुभग सुपावन तट पर और कभी श्री निकुञ्ज धाम में लीला करने वाले सदा उपासनीय नवलकिशोर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४७]

सहचरी समूह की सुखद मनोहर वार्ता सुन-सुन कर मन्द हास्ययुक्त समुपासनीय वृन्दावनाधिपति श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४८]

सखीजन की अभिलाषा का स्मरण कर-कर महारास का आयोजन रचने वाले शरणागत आराध्य वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[४९]

अत्यद्भुतं कृपासिन्धुं प्रपन्नेप्सितसम्प्रदम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५०]

श्यामाऽलकावलीभिश्च सुन्दरं नित्यसुन्दरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५१]

दर्शं दर्शं प्रसीदन्तं भक्तानां भक्तिभावनाम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५२]

श्यामकादम्बिनीस्रस्त—सीकरेणसुशोभनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५३]

यमुनायां स्वकं बिम्ब-मवलोक्यविमोहितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५४]

कलयन्तं महाकेलिं वसन्ते होलिकोत्सवे ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[४९]

परम अद्भुत दिव्य स्वरूप कृपासागर शरणागत जनों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले नित्य चिन्तनीय वृन्दावनेश श्री राधा-माधव का भजन करें।

[५०]

श्याम अलकावली द्वारा सुन्दर नित्य नवनवायमान परम सुन्दर नित्य समाराधनीय वृन्दावनाधीश्वर श्री राधामाधव का भजन करें।

[५१]

भक्तों की अनन्य भक्ति भावना को देख–देख कर प्रसन्न होने वाले वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्री राधामाधव का भजन करें।

[५२]

श्रीवृन्दावनधाम की परम रमणीय अवनि पर लताकुञ्जों के मध्य श्याम घटा (मेघमाला) द्वारा निर्झरित सूक्ष्म वृष्टिकणों (फुंवारों) से परम शोभायमान वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्री राधामाधव का भजन करें।

[५३]

श्रीयमुनाजी की अगाध जल धारा में अपने प्रतिबिम्ब (स्वरूप) को अवलोकन कर सार्वज्ञादिगुणाधिष्ठान होते हुए भी माधुर्य रस स्थिति में संमोहित होने वाले वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५४]

वसन्त एवं होलिकोत्सव पर नाना रंगों के अवीर, गुलाल एवं इत्र आदिकों से रंगमयी दिव्य होरी लीला विहार करते हुए वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५५]

भुञ्जानं भोजनं कुञ्जे सुस्वादुमधुरं वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५६]

सखीनां मण्डले नृत्यं कुर्वाणं विविधात्मकम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५७]

नानाऽलङ्कारवस्त्रैश्च भूषितं मुदितं प्रभुम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५८]

कौशेयवसनै रुच्यं मालया समलङ्कृतम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५९]

अभित आवृतं कुञ्जे मयूर–सारिकादिभिः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[६०]

जम्बू-कदम्ब-दाडिम्ब-कुञ्जपुञ्जेषु संस्थितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[५५]

भोजन कुञ्ज में सखी समूह द्वारा निवेदित सुन्दर स्वाद युक्त मधुर तथा श्रेष्ठ मिष्ठान्न पदार्थों, विविध व्यञ्जनों की भोजन सामग्री का रुचि पूर्वक आस्वादन लेते हुए वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५६]

अनन्त--अनन्त सहचरी मण्डल में नानाविध रूप से अभिनृत्य करते हुए वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५७]

दिव्यातिदिव्य नानाविध अलंकारों एवं वस्त्रों से विभूषित परम प्रसन्न प्रभु वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५८]

देदीप्यमान रेशमी विविध वस्त्रों एवं सुन्दर श्रीवनमाला से विभूषित वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[५९]

अपने सुमधुर कलकण्ठ से श्रीयुगलनामसंकीर्तन करते हुए मयूर, मैना, तोते तथा कोयल आदि नाना पक्षी गणों के मध्य विराजित सघन लताओं से आवृत कुञ्ज--निकुञ्ज में विहार करने वाले वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६०]

जामून, कदम्ब और दाडिम आदि सुभग वृक्षों के कुञ्जसमूह में संस्थित परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६१]

स्वीय—करारविन्देन यच्छन्तमभयं सदा ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६२]

सखीभी रचिते पुष्प—मण्डपे शोभितं शुभे ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६३]

दिव्यद्रुमावलीवल्ली—कुञ्जछायासु मञ्जलम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६४]

भृङ्गावलीनित्यगीतं विहङ्गकुलकूजितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६५]

सच्चिदानन्दरूपञ्च दिव्यमङ्गलविग्रहम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६६]

अनुग्रहात्मकं ध्येयं सततं रसिकाधिपैः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[६१]

अपने कर कमल द्वारा सदा अभय प्रदान करने की चाहना करने वाले वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्री राधामाधव का भजन करें।

[६२]

सखियों द्वारा रचित शोभायमान पुष्प मण्डप में सुशोभित वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्री राधामाधव का भजन करें।

[६३]

दिव्य द्रुमावलियों, विविध लताओं की परम मनोहर कुञ्ज--निकुञ्जों की सुखद शीतल छाया में विराजमान वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६४]

भ्रमर समूह के मधुर गुञ्जन द्वारा नित्य गीयमान तथा नाना पक्षी गणों द्वारा गुण--गान युक्त वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६५]

सच्चिदानन्द स्वरूप दिव्य मङ्गल श्रीविग्रह वृन्दावनाधीश्वर परमाराध्य श्री राधामाधव का भजन करें।

[६६]

रसिक राजराजेश्वरों द्वारा निरन्तर अनुरागात्मिका भक्ति पूर्वक ध्यान किये जाने वाले अनुग्रह रूप वृन्दावनविहारी आराधनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६७]

व्रजाधीशं परं ब्रह्म विश्वब्रह्माण्डनायकम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[६८]

नानासरोवरे क्रीडा-माचरन्तं रसात्मिकाम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[६९]

सद्भिः स्वान्ते समाराध्य-माराध्यं ब्रह्मविद्यया ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७०]

प्रेमक्षीरोदमाधुर्य—सारसर्वस्वमीश्वरम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७१]

वृन्दावनाऽवनौ युग्मं भावयन्तं मिथो रसम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७२]

कोटिचन्द्रमुखं चारु चित्राचित्तहरं हरिम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[६७]

अखिल ब्रह्माण्ड नायक, व्रजाधीश परब्रह्म, वृन्दावनविहारी परमोपास्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६८]

श्रीनिकुञ्ज धाम स्थित विविध सरोवरों पर रसमय लीला विहार करते हुये वृन्दावनाधीश्वर परमाराधनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[६९]

उत्तमश्लोक रसिक सन्त भक्तों द्वारा उनके अन्त:करण में भली प्रकार आराधनीय तथा ब्रह्मविद्या जिनकी निरन्तर आराधना करती है ऐसे परमाराध्य वृन्दावनविहारी श्रीराधा-माधव का भजन करें।

[७०]

प्रेमरूपी महासिन्धु के माधुर्य रूप सारसर्वस्व प्रभु वृन्दा-वनाधिप परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७१]

वृन्दावन की पावन स्थली में युगल-स्वरूप परस्पर प्रस-न्नता पूर्वक एक दूसरे को निकुञ्ज रसपरक भावना करते हुये वृन्दावनाधिपति आराधनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७२]

करोड़ों चन्द्रमाओं के समान श्रीमुख की सुन्दर शोभा है जिनकी, ऐसे चित्रा सखी के चित्त को हरने वाले श्रीहरि वृन्दा-वनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७३]

अहैतुकीकृपाकारं दीन—हीनहितावहम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७४]

कदाचिन्मानलीलाञ्च दधतं रसवर्द्धनाम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७५]

चिन्तनीयं सदा स्वान्ते धारणीयं प्रतिक्षणम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७६]

दर्शनीयं व्रजे कुञ्जे स्पर्शनीयञ्च सर्वदा ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७७]

अचिन्त्यं ब्रह्मरुद्राऽऽद्यै र्निगमागमसेवितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७८]

वृन्दावनधराधीशं वृन्दावनरसप्रदम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[७३]

दीन--हीन भक्त–जनों पर हित पूर्वक अहैतुकी कृपा करने वाले वृन्दावनेश्वर परमोपास्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७४]

कदाचित् (कभी--कभी) कुञ्ज--निकुञ्जों में प्रेमरस वर्द्धक मानलीला को भी धारण करने वाले वृन्दावनाधिप परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७५]

प्रतिक्षण अपने हृदय में विराजमान कर सदा चिन्तनीय वृन्दावनेश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७६]

श्रीव्रज-कुञ्जों में सर्वदा दर्शनीय तथा स्पर्शनीय उन श्री वृन्दावनेश्वर आराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७७]

ब्रह्म-रुद्रादि देवों द्वारा अचिन्त्य, वेद–पुराण प्रतिपादित वृन्दावनाधिप परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७८]

वृन्दावन की पावन भूमि के प्राणधन, वृन्दावन रस प्रदाता वृन्दावनाधीश्वर परम सेवनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[७९]

अगम्यं ज्ञानसम्पन्नैः प्राप्यं भक्तिरसाऽऽश्रितैः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८०]

भिन्नाभिन्नात्मकं यस्माज्जगत्तद्बीजमच्युतम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८१]

वेदान्तादिमहाशास्त्रैः प्रतिपाद्यं सनातनम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८२]

मोहनमन्दिरे रम्ये निकुञ्जे राजितं मुदा ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८३]

सौगन्धिकमहाद्रव्यै--रतिदिव्यसुवासितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[८४]

चित्र--विचित्रपुष्पाणां श्रृङ्गारैःपरिशोभितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[७९]

ज्ञान साधन सम्पन्न साधकों द्वारा अगम्य प्रेमा भक्ति समाश्रित भक्तजनों द्वारा संप्राप्त वृन्दानविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८०]

यह सम्पूर्ण चराचरात्मक जगत् जिनसे भिन्नाभिन्नात्मक है, उस जगत् के मूल कारण अच्युत वृन्दावनविहारी श्रीराधा-माधव का भजन करें।

[८१]

जो वेदान्तादि उत्तम शास्त्रों द्वारा प्रतिपाद्य सनातन स्वरूप हैं, उस वृन्दावनेश्वर परम पूजनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८२]

परम रमणीय मोहन महल की श्रीनिकुञ्ज में प्रसन्नता पूर्वक विराजमान परम सुन्दर स्वरूप वृन्दावनाधीश श्रीराधा-माधव का भजन करें।

[८३]

अति श्रेष्ठ नाना प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों से सुशोभित तथा सुन्दर सुवासित वृन्दावनाधिपति परम सेवनीय श्रीराधा-माधव का भजन करें।

[८४]

चित्र-विचित्र अर्थात् भाँति भाँति के पुष्प शृङ्गार द्वारा परम सुशोभित वृन्दावनेश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८५]

पूर्णं पूर्णतमं ब्रह्म रसवीजं रसालयम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[८६]

अनन्ताऽचिन्त्यसद्धाम सद्रूपं सद्भिरञ्चितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[८७]

श्रीवृन्दारण्यवीथीषु विहरन्तं व्रजेप्सितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[८८]

दिव्यहेमलतापुञ्जे नुतं प्रीत्या सखीगणैः ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[८९]

मणि-माणिक्य-मुक्ताऽऽद्यै रत्नैश्च परिवेष्टितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[९०]

कृपैकलभ्यमाधारं पराभक्त्याः परात्परम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[८५]

परात्पर पूर्णतम परब्रह्म रस के कारण रूप रस सागर वृन्दावनेश्वर परमोपास्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८६]

अनन्त, अचिन्त्य, सद्धाम, श्रेष्ठ स्वरूप तथा सद्भक्तों द्वारा परिसेवित वृन्दावनविहारी परम पूज्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८७]

श्रीवृन्दावन की वीथियों (गलियों) में विहार करते हुए समग्र व्रजवासियों द्वारा निरन्तर तीव्र स्पृहा पूर्वक सेवनीय वृन्दावनविहारी परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[८८]

नित्य नव नवायमान सहचरी वृन्द द्वारा प्रीति पूर्वक अभिवन्दित दिव्य सुवर्णलता मण्डप में विराजमान वृन्दावनेश्वर परमोपास्य श्रीराधामाधव का का भजन करें।

[८९]

मणि--मुक्ता--माणिक्य आदि विविध रत्नों के शृङ्गार से विभूषित वृन्दावनविहारी परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९०]

परात्पर उन युगलकिशोर की उपलब्धि पराभक्ति द्वारा तथा एक मात्र उनकी कृपा पर ही अवलम्बित है, ऐसे उन वृन्दावनेश्वर परम आराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९१]

नेत्राम्बुदिव्यधारायां किमग्नं भजतां सताम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९२]

अञ्जनाक्षं महादक्षं प्रियं कौस्तुभवक्षसम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९३]

गुणावहं गाहमानं प्रतिकुञ्जं प्रतिद्रुमम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९४]

विपञ्चीतारझङ्कृत्या सुप्रभाते समुत्थितम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९५]

नामसंकीर्तनं यत्र तिष्ठन्तं तत्र सर्वदा ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९६]

दिव्यचिन्मयभव्येऽस्मिन्धाम्नि वृन्दावने ततम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ।।

[९१]

भजन करने वाले प्रेमी भक्तों के नेत्रों की जल धारा में निमग्न अर्थात् उस भावभरित भक्त नेत्र जलधारा से अभिषिक्त वृन्दावनविहारी परमसेवनीय श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९२]

नेत्रों में अंजन अर्थात् दिव्य श्याम कज्जल से सुशोभित परमचतुर कौस्तुभमणि धारण करने वाले परम प्रिय वृन्दावनेश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९३]

प्रत्येक कुञ्ज तथा प्रत्येक द्रुमलताओं में गाहमान अर्थात् गहन रूप से विहरण करने वाले अनन्तकल्याणगुणगण निलय परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९४]

प्रभात वेला में शयनकुञ्ज में निकुञ्ज सहचरियों द्वारा अभिवादित वीणा के दिव्य तारों की झङ्कृति से समुत्थित अर्थात् निद्रा त्याग के बाद दिव्य सिंहासन पर विराजित सखी समाराध्य वृन्दावनविहारी श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९५]

जहाँ नाम संकीर्तन हो वहाँ सर्वदा विराजमान रहने वाले उन वृन्दावनविहारी परम सेव्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९६]

दिव्य चिन्मय इस भव्य श्रीधाम वृन्दावन में सर्वत्र अपने दिव्य स्वरूप से परिव्याप्त वृन्दावनेश्वर श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९७]

सतां स्वान्ते सदा शुद्धे शोभितं श्यामलं शुभम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[९८]

नूपुरान्क्वणयन्तं नः पीताम्बरधरं प्रियम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[९९]

केलिरससुधावृष्टि–कारं हारं महासताम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१००]

हरिप्रियासखीहारं हरिं हर्षकरं परम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१०१]

राधासर्वेश्वरं देवं रसदानप्रदं प्रभुम् ।
राधामाधवमाराध्यं भजेद्वृन्दावनाधिपम् ॥

[१०२]

श्रीराधामाधव–प्रेम–शतकं रसदं हरेः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

[९७]

भक्तों के शुद्ध हृदय में सदा विराजमान गौर श्याम स्वरूप युगलकिशोर वृन्दावनविहारी सर्वदा आराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९८]

जिनके चरण कमल के नूपुरों की सुमधुर ध्वनि हो रही है, ऐसे हमारे हृदयरमण परमप्रिय पीताम्बरधारी वृन्दावनेश्वर परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[९९]

लीला रस रूप अमृत वृष्टि के करने वाले तथा श्रेष्ठ रसिक भक्तों के गले के हार रूप वृन्दावनविहारी परमपूज्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१००]

श्रीहरिप्रिया सखी के कण्ठ के हार स्वरूप परमानन्द प्रदान करने वाले वृन्दावनेश्वर परम सेवनीय श्रीहरि राधामाधव का भजन करें।

[१०१]

रस दान परायण प्रभु श्रीराधासर्वेश्वर वृन्दावनविहारी परमाराध्य श्रीराधामाधव का भजन करें।

[१०२]

श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीराधामाधव श्री हरि के प्रेमरस को प्रदान करने वाला यह शतक सम्पूर्ण हुआ।

मंगल-प्रार्थना

आचार्यैरनुभूय साधनरतैः स्वान्तः सुखायाऽथवा
लोकानां हितकाम्यया व्यरचि यन्माधुर्यभावात्मकम्
वृन्दारण्य—निकुञ्जधामधरणीसद्रूपता—दर्शकं
राधामाधवयुग्मकेलिशतकं तन्मङ्गलं यच्छतु ॥१॥

सूत्रेषूपनिषत्सु तत्त्वममलं तन्त्रादिषूक्तं भृशं
पूर्वाचार्यवरैर्यदेव महता भावेन वाण्यादिषु ॥
प्रत्येकं पृथगत्र दिव्यचरितं सद्भावगम्यं जनै—
र्द्वैताद्वैतपरं तदेव रचितं ह्याचार्यवर्यैर्मुदा ॥२॥

मुख्यं वै प्रवदन्ति तत्त्वविवृतौ वेदाः प्रमाणं पुनः
तन्त्राणि स्मृतयः पुराणनिकरा इत्येव सर्वं बुधाः ॥
संक्षेपेण निवद्धमत्र शतके सच्छास्त्रपुञ्जं महत्
कल्याणाय भवेदशेषजगतः शास्त्राब्धिसारामृतम् ॥३॥

श्रीनिम्बार्कवीथीपथिकः—

वासुदेवशरण उपाध्यायः
प्राचार्य
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

**

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

द्वारा विरचित ग्रन्थ-माला

१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत "प्रातः स्तवराज" पर युगलतत्त्व प्रकाशिका नामक व्याख्या
२. श्रीयुगलगीतिशतकम्
३. श्री 'श्रीजी' महाराज के सदुपदेश
४. श्रीसर्वेश्वर सुधा-विन्दु
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलि
६. श्रीराधामाधवशतकम्
७. श्रीनिकुञ्ज सौरभम्
८. हिन्दु संघटन
९. भारत-भारती-वैभवम्
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः
१२. भारत कल्पतरु
१३. श्रीहनुमन्महाष्टकम्
१४. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्

मुद्रक—श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)